34303

Reg. No. | | | | | | | | |

III Semester B.Com/B.C.H.N/B.C.L.S/.B.C.T.T/B.C.A.F. Degree Examination, March-2021

HINDI

Natak Sarkari Patra aur Sankshepan

(CBCS Freshers Scheme)

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 70**

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। **(10×1=10)**

1. किसने पुश्तैनी घर को हानुश के नाम लिख दिया था?
2. घड़ी कितने सालों बाद बनकर तैयार होती है?
3. हानूश की दरख्वास्त को किसने नामंजूर कर दिया था?
4. पादरी के अधीन में कितने गिरजे थे?
5. कात्या की बेटी का नाम लिखिए?
6. कौन अपनी आजीविका चलाने के लिए ताले बनाया करता था?
7. महाराज किस राज्य को अपना दुश्मन मानते थे?
8. लाट पादरी कौन से रंग का लबादा पहनते हैं?
9. लोहार को हानुश क्या कहकर पुकारता था?
10. 'हानुश' नाटक के नाटककार कौन है?

II किन्हीं दो की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए। **(2×6=12)**

1. "सियाने कह गए हैं: पीठ अतीत की ओर और मुँह भविष्य की ओर होना चाहिए।"
2. "घड़ी बनाना इनसान का काम नहीं, शैतान का काम है।"
3. "मालिक! मालिक! यह जुल्म नहीं करो। मुझे ज़िन्दा दफना दो मालिक, मगर मुझे अन्धा नहीं बनाओ।"
4. "चलो, अच्छा हुआ, अपनी मौत मर गई। हम दोनों में होड़ चल रही थी कि पहले कौन दम तोड़ता है."

P.T.O.

III. 1. 'हानुश' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (1×12=12)

(अथवा)

2. 'हानूश' नाटक के आधार पर 'कात्या' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

IV किसी <u>एक</u> पर टिप्पणी लिखिए। (1×6=6)

1. पादरी।

2. ऐमिल-कात्या का वार्तालाप।

V. पत्र लेखनः- (कोई दो) (2×10=20)

1. सुश्री नूरेन फातिमा, उपनिदेशक, शिक्षा विभाग, कर्नाटक राज्य की ओर से श्वेता छाबरिया, लिपिक की 01 अप्रैल 2021 से 30 अप्रैल 2021 तक की 30 दिन की अर्जित छुट्टी स्वीकार करते हुए एक कार्यालय आदेश लिखिए।

2. सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की ओर से शिक्षा सचिव, कर्नाटक सरकार को एक सामान्य सरकारी पत्र लिखकर देश में एक समान पाठ्यक्रम जारी करने की दिशा में अभिप्राय माँगिए।

3. अपने क्षेत्र में फैले हुए कोविड-19 सर्वव्यापी महामारी के रोकथाम हेतु, उपसचिव, स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत-सरकार की ओर से सभी राज्य सरकारों को सुचित करते हुए एक परिपत्र लिखिए।

VI. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए एक तिहाई में संक्षेपण कीजिएः- (1×10=10)

हमारे देश के त्यौहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जा रहे हों या नए वर्ष के आगमन के रुप में; फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हों या महापुरुषों की याद में; सभी अपनी विशेषताओं एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त होने के साथ ही देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंड़ता को मज़बूती प्रदान करते हैं। ये त्यौहार जहाँ जनमानस में उल्लास, उमंग एवं खुशहाली भर देते हैं, वहीं हमारे अंदर देश-भक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ, विश्व-बंधुत्व एवं समन्वय की भावना भी बढ़ाते हैं। इनके द्वारा महापुरुषों के उपदेश हमें बार-बार इस बात की याद दिलाते हैं कि सद्विचार एवं सद्भावना द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं। इन त्यौहारों के माध्यम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में धर्मों का मूल लक्ष्य एक है, केवल उस लक्ष्य तक पहुँचने के तरीके अलग-अलग हैं।